ISSN: 2456–4397 RNI No.UPBIL/2016/68067 Vol-5* Issue-5* August-2020
Anthology : The Research

मीन (मछली) – एक मांगलिक प्रतीक

Pisces (Fish) - A Manglic Symbol

Paper Submission: 16/08/2020, Date of Acceptance: 26/08/2020, Date of Publication: 27/08/2020

संगीता गौतम
एसोसिएट प्रोफेसर,
एस.एस. खन्ना महिला महाविद्यालय, इलाहाबाद,
उत्तर प्रदेश, भारत

सारांश

प्राचीन काल से ही भारत में मीन का मांगलिक प्रतीक रूप में बहुतायत से अंकन हुआ है। हड़प्पा काल की मोहरो तथा मृदभांड में मीन आकृतियां उत्तीर्ण पाई गई हैं भारत में एक पूरा पुराण मत्स्य पुराण हैं और विष्णु के अनेक अवतारों में एक अवतार मत्स्य अवतार भी है

भारत में मीन का मांगलिक प्रतीक के रूप में बहुतायत से अंकल हुआ है पंच मार्क के सिक्कों पर दंड ऊपर यहां तक की तलवार के मुठों पर भी मीन का आकार अंकित किया गया है। आयाम पट्टों छत्रों तोरणों स्तूपोर चैत्यों मंदिरों के द्वार चौखटों और इमारतों की मेहराबों पर मीन के विविध रूप उकेरे गए हैं यह परंपरा सांची उदयगिरी आदि शुंग कालीन कला केंद्र से प्रारंभ हो गई थी।

मीन का दर्शन आज भी शुभ शकुन माना जाता है यात्रा आरंभ में यदि दही और मछली का दर्शन हो जाए तो इसे मंगलमय कहा जाता है दही मछली की कामना करना कार्य मंगलमय संपन्न हो जाने की इच्छा जताता है शुभ द्रव्यों के उल्लेख में फल स्वास्तिक मोदक और दही के साथ-साथ मीन का नाम भी आता है।

Since ancient times, there has been a lot of marking of Pisces in India as an iconographic symbol. The moharas and pottery of the Harappan period have been found to pass Pisces figures, there is a complete Purana Matsya Purana in India and there is also an incarnation of Matsya avatar in many incarnations of Vishnu.

In India, Pisces is abundantly unclean as a Manglik symbol. On the coins of the punch mark, the shape of Pisces is inscribed on the forehead even on the foreheads of the sword. Dimensions Pattas Chhatron Torano Stupor Chaitya Temples of temples are carved into various forms of Pisces on the archways and arches of the buildings.

Darshan of Pisces is considered to be auspicious even today, if the journey starts with yogurt and fish, then it is said to be auspicious, wishing for the work of yogurt fish expresses the desire to be happy Along with yogurt, the name of Pisces also comes.

मुख्य शब्द : वसुधैव कुटुंबकम, शकुन अपशकुन, प्रजनन शक्ति, मातृ देवी, अष्ट मांगलिक चिह्न, मिथुन मत्स्य विभाग, दशावतार।

Vasudhaiva Kutumbakam, Shakuna Upshakun, Fertility, Mother Goddess, Ashta Manglik Icon, Mithun Fisheries Department, Dashavatar.

प्रस्तावना

भारतीय संस्कृति को समस्त मानवीय सद्गुणों का समन्वयात्मक समष्टि कहा जाए तो कोई अत्युक्ति नहीं होगी, क्योंकि इसमें सर्वोपि सन्तु सुखिनः, का जहां शंखनाइ है वहीं वसुर्धव कुटुम्बकम की महती कल्याणकारी भावना समाहित है। 'सत्यमेव जयते' का जहां अचल विश्वास और अडिग संकल्प है वहीं पर 'अहिंसा परमोधर्माः, को धरतही की धुरी मापकर सभी प्राणियों की प्राणरक्षा का आवाह्न है, उद्घोष है और संसार को सुखी देखने की साध्य है।

भारतीय कलाओं में प्रतीक मान्यताओं के आधार पर प्रयुक्त किए गये हैं किसी अदृष्ट वस्तु के प्रतिविधान के रूप में किसी दृष्ट वस्तु का प्रयोग प्रतीक विधान कहलाता है। इस भौतिक जगत में अमूर्त, अदृश्य, अश्रव्य एवं अप्रस्तुत वस्तु जब नूर्तिमान, श्रवरूमान एवं रूपवान बनार्अ जाती है तो प्रतीक का सहारा लेकर उसे प्रस्तुत किया जाता है। अमूर्त चिन्तन, धर्म आदि में इनकी संख्या के श्रोत असंख्य है। भक्ति और श्रृंगारिक गीतों में इन प्रतीकों के माध्यम से साहित्य का अक्षय भण्डार प्रस्तुत किया गया है। हांथी, वृषभ, अश्व, मेष, सर्प, शुक्र, मयूर,

हंस, कपोत, कौवा, वृक्ष और मीन आदि चित्रकला में विशेषरूप से प्रयुक्त प्रतीक पहाड़ी शैलियों में आए हैं, रंगों की भी प्रतीकात्मति चित्रकला में सहज रूप से मिलती है जिसका अर्थ सरलता पूर्वक समझ लिया जाता है। ये प्रचलित प्रतीक जीवन के ऐसे अभिन्न अंग बन जाते हैं जिनमें कभी भी कोई परिवर्तन नहीं दिखाई पड़ता। कभी–कभी शकुन–अपशकुन के रूप में भी जीवन में प्रतीक रूप लेते हैं। बड़े–बड़े कामों में प्रतीक का प्रयोग न हो तो उसका पुन' होना असमभव हो जाए। कलाकारों ने समस्त ब्रम्हाण्ड का प्रतीक के रूप में ही मानकर उसकी परिकल्पनाएं प्रस्तुत की है। शोभा, आरक्षा और कल्याण के जो मांगलिक चिन्ह् सनातन काल से भारतीय संस्कृति में प्रतिष्ठित रहें हैं उनमें से मीन की प्रतीकात्मक महत्ता आज भी कायम है। मीन के माध्यम से हम आज भी संतति और समृद्धि की शुभकामनाएं प्रेषित करते हैं।

मीन एक सुन्दर जलचर है। इसकी बनावट एक सुन्दर नेत्र के तरह ही होती है। इसलिए सुन्दर नेत्रों की उपमा मीन से की जाती है। रामचरित मानस में संत तुलसीदास ने कई जगह भगवान राम के नेत्रों की उपमा मीन से की है–

'' प्रभुहिं चितइ पुनि चितइ महि, राजत लोचन लोल।
खेलत मनसिज मीन जुग, जनु बिधु मण्डल डोल।।''

किन्तु मीन का सौन्दर्य ही मीन के प्रति आकर्षण का विषय नहीं हैं, मीन सच्चे प्रेम का प्रतीक भी है जल से मीन का प्रेम तो इतना अधिक है कि वह जल के बिना रह ही नहीं सकती–

''जाल परे जल जात बहि, तजि मीनन का मोह।
रहिमन मछरी नीर को, तऊ न छांड़त छोह।।''

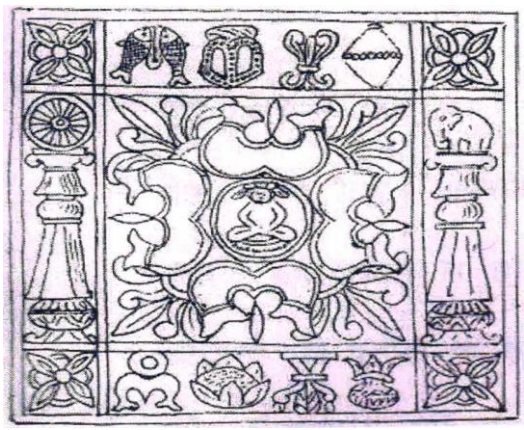

मीन अपनी उर्वरा प्रजनन शक्ति (फर्टिलिटि) के कारण संतति के लिए शुभकामना का प्रतीक भी बनी है।[4] मेसोपोटामिया में तो मीन मातृ देवी की उपासना अथवा सृष्टि पूजा का एक अंग है। मीन के साथ उत्कीर्ण की गई नारी की प्रस्तर मूर्तियां जो भारत में मिलत हैं, उन्हें वसुन्धरा देवी के रूप में स्वीकार किया गया है। हमारे यहां मत्स्यकन्या की जो कल्पना है वह नारी के सौन्दर्य और उसकी कमेषणा को रेखांकित करती है। कामदेव का ऐ प्रतीक मीन हे। कामदेव क मंदिरों में जो पताका फहराई जाती है, वह मीन ध्वज है जिसमें मीन चित्रित की जाती है। कामदेव को मीन केतक भी कहा जाता है।

मीन का मिथुन के साथ सामूहिक अंकन भी देखने को मिलता है। जो कि भारतीय अष्टमांगलिक चिन्हों में से एक है। जैन धर्म में अष्टमांगलिक चित्रों का विशेष महत्व पाया गया है। जैन ग्रन्थों में विभिन्न अष्टमांगलिक लक्षणों की गणना है जिनमें मीन–मिथुन को भी सम्मिलित किया गया है। अष्टमांगलिक चिन्हों को शोभा, अरक्षा एवं कल्याण के लिए आयागपट्टों, छत्रों, बुद्ध पदों, आभूषणों तथा सिक्कों पर उत्कीर्ण किया जाता था।

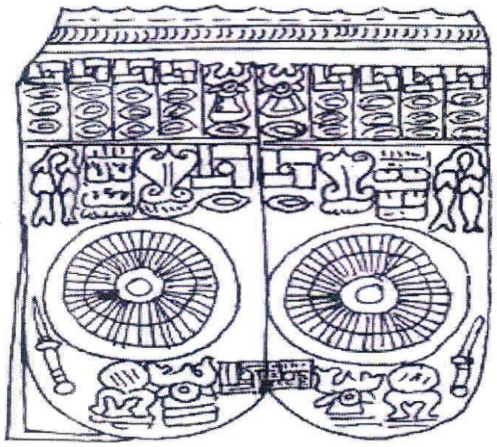

मथुरा से मिली जैन तीर्थकर पार्श्वनाथ की एक प्रतिमा में पीछे बने नागफनों पर अष्टमांगलिक चिन्ह उत्कीर्ण हैं। इनमें एक चिन्ह् मीन मिथुन को भी है।[5] सारनाथ संग्रहालय में रखी बुद्ध प्रतिमा के ऊपर पाये गये एक गोल छत्र पर आठ मांगलिक चिन्ह तथा चार अन्य प्रतीक घड़ी के बारह अंकों के स्थान पर उत्कीर्ण हैं। इनमें प्रथम स्थान मीन का है। मीन–मिथुन का यह मांगलिक चिन्ह् नागार्जुन कोण्डा से मिले तृतीय शती ई0 के बुद्ध पदों की एड़ी तथा अंगुठे के पास वाली उंगलियों पर भी उत्कीर्ण हैं।[6] आभूषणों को भी मीन के रूप में बनाए जाने की परम्परा थी।

प्राचीन काल से ही भारत में मीन का मांगलिक प्रतीक रूप में बहुतायत से अंकन हुआ है। हड़प्पा काल की मोहरों तथा मृदभांडो में मीन आकृतियां उत्कीर्ण पाई गई हैं।[9] मीन–मिथुन के रूप में सर्वप्रथम अंकन पांचवी–छठी शती ई0 पूर्व के पंचमार्क रजत सिक्कों के रूप में हुआ है। सिक्कों पर मीन का आंकन एकांकी है। कुछ सिक्कों में पाया गया मीन–मिथुन का अंकन विशेष रूप से उल्लेखनीय है इसमें दोनों मीन मुख की ओर से परस्पर जुड़ी प्रदर्शित हैं। ध्यज दण्ड पर सुशोभित मीन का आंकन तक्षशिला तथा कौशाम्बी से प्राप्त सिक्कों पर और राजघाट (वाराणसी) से मिली एक मोहर पर उपलब्ध है। कौशाम्बी से ही प्राप्त एक शुंगकालीन तलवार की मूंठ पर एक चौकोर वेदिका से घिरे दण्ड पर मीन–ध्वज दर्शनीय है।[10]

तोरणो, छत्रों तथा आयागपट्टो से होते हुए अष्टमांगलिक चिन्हों को अंकन भारतीय भवनों तक पहुँच गया। स्तुपों, चैत्यों और मंदिरों की द्वार–चौखटों पर उन्हें उकेरा जाने लगा। 11वीं शती द0 में भोज ने अपने ग्रन्थ समरांगण सूत्रभार में द्वार मण्डल की अध्टमंगला लक्ष्मी का जो उल्लेख किया है वह शंख और मत्स्य की माला पहने हुए तथा उत्तम गजों से स्नान करायी जाती हुई कही गयी है। भवनों के आगे बड़े–बड़े फाटकों के निर्माण होने पर इन द्वारों की ऊपरी मेहराबों पर प्रायः अगल बगल एक–एक मछली कर आकृती उत्कीर्ण की जाने लगी। ये मछली प्रतीक के प्रयोग का उत्कृष्ट उदाहरण हैं।[11]

मीन का दर्शन आज शुभ शकुन माना जाता है। यात्रा आरम्भ के अवसर पर दधि और मीन का दर्शन शुभ माना जाता है। रामचरित मानस में इसका संकेत है– 'आयउ सम्मुख दधि अरू मीना'।[12] आज भी इस परम्परा का पालन किया जाता है। चूँकि दधि और मीन हर समय हर समय हर स्थान पर उपलब्ध नहीं होते हैं। इसलिए केवल इनके नामोच्चार से शुभ शकुन मान लिया जाता है। अर्थात् – ''जाओ जब आना तब दही–मछली लाना''। शुभ द्रव्यों केद उल्लेख में फल–स्वास्तिक मोदक और दधि के साथ–साथ मीन का नाम भी आता हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

उपरोक्त अध्ययन का उद्देश्य भारतीय संस्कृति मे पौराजिक काल से लेकर वर्तमान समय तक मंगल–प्रतीक के रूप मे मीन मछली की महत्वा एंव शुभ अवसरों पर उसकी प्रासंगिता से समाज को अवगत कराना है।

निष्कर्ष

विष्णु के दशावतारों में प्रथम अवतार मत्स्य का अंकन दस लघु चित्र में है। समुद्र के अन्दर ऊपर मुख किये मछली के मुख से सांवले रंग के सिर पर किरीट मुकुट, गले पर हार, कान, में कुण्डन, भुजबन्द तथा कंगन आदि अलंकरणों को धारण किये विष्णु निकलते दिखाये गये हैं चतुर्भुजी विष्णु के बायें हाथों में चक्र व पुष्प के साथ शंख, नीचे के दाहिने हाथ में दैत्य के बाल को पकड़ रखा है। ऊपर के हाथ में फरसा हैं विष्णु लाल रंग का उत्तरीय तथा पीले रंग का अधोवस्त्र धारण किये हैं। विविध अंकरणों से अलंकृत दैत्य के मुख से विष्णु द्वारा केश के खीचें जाने पर रूधिर प्रवाहित हो रहा है। चित्र के ऊपर बादल तथा वनस्पति का सुन्दर चित्रण है। 19वीं शती ई0 का यह पहाड़ी शैली का चित्र पं0 गोविन्द बल्लभ पंत राजकीय संग्रहालय अल्मोड़ा, में संग्रहीत है।

सन्दर्भ ग्रंथ सूची

1. *सांस्कृतिक प्रतीक कोश, शोभनाथ पाठक – पृष्ठ संख्या – 11*
2. *भारतीय कला एवं संस्कृति के प्रतीक, डॉ. सुरेन्द्र वर्मा – पृष्ठ संख्या –*
3. *श्रामचरित मानस बाल काण्ड 258*
4. *सतीश चन्द्र काला पृष्ठ संख्या – 411*
5. *स्मिथ, जैन स्तूप एण्ड अदर एण्टीक्विटीज ऐट मथुरा, फलक – 9*
6. *ए0 एल0 श्रीवास्तव, श्री वत्सः भारतीय कला का मांगलिक प्रतीक – पृष्ठ संख्या – 99*
7. *आर्कियोलाजिकल सर्वे आफ इण्डिया, एनुअल रिपोर्ट 1923 – 23 फलक 27/1*
8. *इलाहाबाद म्युजियम कैटलॉग आफ मिनिएचर आबजेक्टस सं0 6, 39, 90, 99, 113*
9. *द्रष्टव्य मार्शल, तक्षशिला, वाल्यूम 3, फलक 230, 231*
10. *यह मूँठ इलाहाबाद – संग्रहालय की की अमूल्य निधि है।*
11. *समरांगण सूत्रधार 34/25–28 द्रष्टव्य द्विजेन्द्रनाथ शुक्ल, वास्तुशास्त्र, पृष्ठ संख्या 173*
12. *रामचरित मानस बालकाण्ड, 303*
13. *हमारी विरासत, संस्कृति विभाग, उ0 प्र0*